Faizane Jumadal Ula w Jumadal Ukhra (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 325
Weekly Booklet : 325

फ़ैज़ाने

जुमादल ऊला व जुमादल उख़रा

सफ़हात 17

- दुरुस्त नाम और सहीह तलफ़्फ़ुज़ 02
- साल भर तंगदस्ती से हिफ़ाज़त 05
- मोमिन का मौसिमे बहार 09
- नेक वज़ीर 15

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **फ़ैज़ाने जुमादल ऊला व जुमादल उख़रा**

सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल आख़िर **1445** हि., अक्तूबर **2023** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**फ़ैज़ाने जुमादल ऊला व जुमादल उख़्रा**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

फ़ैज़ाने जुमादल ऊला व जुमादल उख़्रा[1]

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 15 सफ़्हात का रिसाला : **''फ़ैज़ाने जुमादल ऊला व जुमादल उख़्रा''** पढ़ या सुन ले उसे इस्लामी महीनों का अदब नसीब कर और उस की मां बाप समेत बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुसल्मान जब तक मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहता है, फ़िरिश्ते उस पर रह़मतें भेजते रहते हैं, अब बन्दे की मरज़ी है कम पढ़े या ज़ियादा। (ابن ماجہ، 1/490، حدیث:907)

बैठते, उठते, जागते, सोते हो इलाही ! मेरा शिआ़र दुरूद

(ज़ौक़े ना'त, स. 124)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

''जुमादल ऊला'' और ''जुमादल उख़्रा'' नाम रखने की वज्ह

इस्लामी साल का पांचवां महीना ''जुमादल ऊला'' और छटा ''जुमादल उख़्रा'' है। इस्लामी महीनों का तअ़ल्लुक़ चूंकि चांद से है और गर्दिशे चांद के सबब इन महीनों में मौसिम बदलता रहता है। एक मौसिम किसी महीने में आता है तो अगले चन्द सालों में वोह मौसिम किसी और

1... येह रिसाला अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की किताब ''इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल'' से जुमादल ऊला और जुमादल उख़्रा के महीनों की मुनासबत से तय्यार किया गया है। (शो'बा हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़)

महीने में आ जाता है, इसी लिये मौसिम को इस्लामी महीनों के साथ ख़ास नहीं कर सकते लेकिन जब इन महीनों के नाम रखे गए उस वक़्त इस पांचवें और छटे महीने में इतनी सर्दी पड़ती थी कि पानी जम जाया करता था और जुमादा का मा'ना है "जम जाना" इसी मुनासबत से पांचवें महीने को "जुमादल ऊला" और छटे महीने को "जुमादल उख़्रा" कहा जाने लगा। (تفسیر ابن کثیر، التوبۃ، تحت الآیۃ:36، 4/129)

दुरुस्त नाम और सह़ीह़ तलफ़्फ़ुज़[1]

लुग़त के ए'तिबार से इन दोनों महीनों के दुरुस्त नाम और सह़ीह़ तलफ़्फ़ुज़ येह हैं : जुमादल ऊला, जुमादल उख़्रा और जुमादल आख़िरा।

जुमादल ऊला कैसे गुज़ारें ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिये पूरा साल ही फ़राइज़ो वाजिबात की पाबन्दी के साथ साथ नफ़्ली इबादात का भी एहतिमाम करना चाहिये क्यूं कि **अल्लाह** पाक अपने बन्दों के हर नेक अ़मल पर फ़ज़्लो करम की छमाछम बारिश बरसाता है, बिल ख़ुसूस कुछ महीनों के मख़्सूस अय्याम और उन की रातों में उस के दरियाए रह़मत की रवानी मज़ीद बढ़ जाती है, उस की रह़मत को पाने और शौक़े

1... मश्हूर नह़वी इमाम फ़राअ कहते हैं : كُلُّ الشُّهُوْرِ مُذَكَّرَةٌ اِلَّا جُمَادَيَيْن या'नी तमाम महीनों के नाम मुज़क्कर हैं सिवाए दो जुमादी महीनों (या'नी जुमादल ऊला और जुमादल उख़्रा या अल आख़िरह) के, इन दोनों के नाम मुअन्नस हैं। (الشماریخ فی علم التاریخ، ص13)
जब लफ़्ज़ "जुमादा" मुअन्नस है तो इस की सिफ़त भी मुअन्नस ही ज़िक्र की जाएगी इसी लिये "जुमादल अव्वल" और "जुमादल आख़िर" न कहा जाए क्यूं कि "अल अव्वल" और "अल आख़िर" मुज़क्कर हैं बल्कि "जुमादल ऊला" और "जुमादल उख़्रा" कहना चाहिये। ऐसे ही छटे महीने को "जुमादस्सानी" भी न कहा जाए क्यूं कि सानी वहां आता है जहां उस के बा'द सालिस (तीसरा) भी हो, जब कि यहां तीसरा नहीं। (غیاث اللغات، باب الجیم، ص194-195)

इबादत बढ़ाने के लिये उन में मख़्सूस इबादात और अवरादो वज़ाइफ़ पर अज्रो सवाब की बिशारतें दी गई हैं। जुमादल ऊला के महीने में भी शौक़े इबादत बढ़ाने और ख़ूब ख़ूब अज्रो सवाब कमाने के लिये बुज़ुर्गाने दीन के मा'मूलात और उन से मन्क़ूल इबादात और कुछ अवरादो वज़ाइफ़ यहां नक़्ल किये जा रहे हैं, **अल्लाह** करीम से दुआ है कि हमें इस माहे मुकर्रम में अपनी रिज़ा व ख़ुशनूदी के लिये ख़ूब ख़ूब इबादात करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

पहली रात के नवाफ़िल

"जवाहिरे ख़म्सा" में है कि जुमादल ऊला की पहली तारीख़ को सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم बीस रक्अ़त नमाज़ पढ़ा करते थे और हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिहा के बा'द एक बार सूरए इख़्लास ﴿قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ﴾ पढ़ते। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द एक सो मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ते थे।

(جواہر خمسہ، ص21)

ख़लीफ़ए मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द, फ़ैज़े मिल्लत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ैज़ अह़मद उवैसी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : اِنۡ شَآءَاللّٰہ इस नमाज़ की बरकत से **अल्लाह** पाक बे शुमार नमाज़ों का सवाब अ़ता करेगा। (इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 65)

"जवाहिरे ख़म्सा" में है : पहली रात दो रक्अ़त इस त़रह़ अदा करे कि पहली रक्अ़त में सूरए फ़ातिहा के बा'द सूरए जुमुअ़ह और दूसरी में सूरए मुज़्ज़म्मिल पढ़े। (جواہر خمسہ، ص21)

जो इस महीने की पहली रात और पहले दिन चार रक्अ़त नमाज़ पढ़े और हर रक्अ़त में (सूरए फ़ातिहा के बा'द) ग्यारह मरतबा सूरए इख़्लास

﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ﴾ पढ़े तो **अल्लाह** पाक 90 साल की इबादत उस के नामए आ'माल में लिखने का हुक्म देता है और 90 हज़ार साल की बुराइयां उस के नामए आ'माल से मिटा देता है। (جواہر غیبی، ص618)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ैज़ अह़मद उवैसी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि पहली तारीख़ को बा'द नमाज़े मग़रिब 8 रक्अ़त नमाज़ चार सलाम से पढ़नी है, पहली और दूसरी रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द सूरए इख़्लास ﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ﴾ ग्यारह ग्यारह मरतबा पढ़े। येह नमाज़ बहुत अफ़्ज़ल है और इस के पढ़ने से اِنْ شَآءَاللّٰه बे शुमार इबादात का सवाब पाक परवर्दगार की त़रफ़ से अ़त़ा किया जाएगा। (इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 65)

तीसरी रात के नवाफ़िल

''जवाहिरे ख़म्सा'' में है : तीसरी रात को बीस रक्अ़त दस सलाम से पढ़े और हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द दस दस बार सूरए क़द्र पढ़े। नमाज़ के बा'द सुब्ह़ तक येह तस्बीह़ पढ़ता रहे : يَاعَظِيْمُ تَعَظَّمْتَ بِعَظَمَتِكَ وَالْعَظَمَةُ فِي عَظَمَتِكَ يَاعَظِيْم (**तरजमा :** ऐ अ़ज़मत वाले ! तू अपनी बड़ाई के सबब अ़ज़मत वाला है और ऐ अ़ज़मत वाले ! ह़क़ीक़ी बड़ाई तेरी ही बड़ाई है।) (جواہر خمسہ، ص21)

सत्ताईसवीं रात के नवाफ़िल

''जवाहिरे ख़म्सा'' में है : इस माह की सत्ताईसवीं तारीख़ को 8 रक्अ़तें दो सलाम से पढ़िये और हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द सूरए वद्दुह़ा एक एक बार पढ़िये फिर येह तस्बीह़ पढ़िये : ''سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوْحِ'' (**तरजमा :** पाक है, बे ऐ़ब है फ़िरिश्तों और रूह़ का रब।) (جواہر خمسہ، ص22۔ لطائف اشرفی، 2/231)

जुमादल ऊला के रोज़े

ह़ज़रते शाह कलीमुल्लाह शाह जहांआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस महीने की दूसरी, बारहवीं और इक्कीसवीं को रोज़ा रखने का बहुत सवाब है। (مرقع کلیمی، ص199۔جواہر غیبی، ص618)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

जुमादल उख़्रा कैसे गुज़ारें ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! तमाम इस्लामी महीनों की त़रह़ जुमादल उख़्रा भी बड़ी ख़ैरो बरकत का महीना है और इस माह की इ़बादत बहुत अफ़्ज़ल है। येह महीना इस्तिक़्बाले माहे रजब है गोया इस की इ़बादत का मक़्सद माहे रजब की हुर्मत है। इस माहे मुबारक के मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم से मख़्सूस इ़बादात व नवाफ़िल मन्क़ूल हैं जिन्हें अपना कर **अल्लाह** पाक की रिज़ा व ख़ुशनूदी और इस महीने की बरकतें ह़ासिल की जा सकती हैं।

जुमादल उख़्रा के रोज़े

जुमादल उख़्रा में रोज़ा रखने से मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते शाह कलीमुल्लाह शाह जहांआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस महीने की पहली, पन्दरहवीं और आख़िरी तारीख़ को रोज़ा रखने का बहुत सवाब है। (مرقع کلیمی، ص199)

पहली रात के नवाफ़िल

''जवाहिरे ख़म्सा'' में है : जुमादल उख़्रा की पहली रात दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े और सलाम के बा'द ख़ूब इस्तिग़्फ़ार करे। (جواہر خمسہ، ص22)

साल भर तंगदस्ती से ह़िफ़ाज़त

जो शख़्स बारह रक्अ़तें छे सलाम से पढ़े और हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द सूरए क़ुरैश ﴿لِاِیْلٰفِ قُرَیْشٍ﴾ पढ़े और नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर

सूरए यूसुफ़ की तिलावत करे, **अल्लाह** करीम उसे तंगदस्ती और मुफ़्लिसी से एक साल तक महफ़ूज़ रखेगा। (جواہر خمسہ، ص22)

फ़ैज़े मिल्लत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ैज़ अह़मद उवैसी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बुज़ुर्गाने दीन (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم) से मन्क़ूल है कि इस महीने में जो शख़्स चार रक्अ़त नफ़्ल अदा करे और हर रक्अ़त में (सूरए फ़ातिह़ा के बा'द) सूरए इख़्लास ﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ﴾ तेरह (13) मरतबा पढ़े तो **अल्लाह** करीम उस के बे शुमार गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देता है और उस के नामए आ'माल में बहुत सी नेकियां दाख़िल फ़रमाता है।

(इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 67)

हुर्मतो अ़ज़मत की बिशारत

फ़ैज़े मिल्लत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ैज़ अह़मद उवैसी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो कोई जुमादल उख़्रा की इक्कीसवीं रात से आख़िरी तारीख़ तक हर रात बा'द नमाज़े इ़शा बीस रक्अ़त नमाज़ दस सलाम से पढ़े और हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द सूरए इख़्लास ﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ﴾ एक एक बार पढ़े, **अल्लाह** पाक उस नमाज़ के पढ़ने वाले को हुर्मतो अ़ज़मत बख़्शता है। (इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 70)

''जवाहिरे ख़म्सा'' में है : इक्कीसवीं रात से आख़िरी तारीख़ तक कई सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان हर रात बीस रक्अ़त नमाज़ पढ़ा करते थे।

(جواہر خمسہ، ص22)

आख़िरी अ़शरे के आ'माल

कई सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस महीने के आख़िरी अ़शरे में इस्तिक़्बाले रजबुल मुरज्जब के लिये रोज़े रखा करते थे। (جواہر خمسہ، ص22)

फ़ैज़े मिल्लत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती फ़ैज़ अह़मद उवैसी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जुमादल उख़्रा की आख़िरी तारीख़ को रोज़ा रखना रजब शरीफ़ के इस्तिक़्बाल के लिये मुस्तह़्सन है।

(इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 70)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ (वफ़ात : 597 हि.) फ़रमाते हैं : इन्सान को चाहिये कि रजब शरीफ़ की आमद से पहले इस्तिक़्बाले रजब के लिये ख़ुद को गुनाहों से पाक साफ़ करे, अपनी हर ख़त़ा अपने हर गुनाह पर नादिमो शरमिन्दा हो कर **अल्लाह** पाक की बारगाह में तौबा करे और तौबा के ज़रीए अपने दिल को गुनाहों की गन्दगी से पाक कर ले। (النور فی فضائل الایام والشہور، ص129)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

जुमादल ऊला और उख़्रा की मुतफ़र्रिक़ इबादात

बा'ज़ नेकियां ऐसी हैं कि जिन के ज़रीए हर माह अज्रो सवाब कमाया जा सकता है। फ़राइज़ की पाबन्दी के साथ साथ जुमादल ऊला और जुमादल उख़्रा में इन नेकियों का भी एहतिमाम कीजिये और **अल्लाह** पाक की ख़ूब रह़मतें और बरकतें ह़ासिल कीजिये।

रोज़े के लिये महीने के अफ़्ज़ल अय्याम

ह़ज़रते इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ हर महीने के अफ़्ज़ल दिनों के बारे में फ़रमाते हैं : महीने का पहला, दरमियानी और आख़िरी दिन और दरमियान में अय्यामे बीज़ या'नी चांद की तेरह, चौदह और पन्दरह तारीख़। येह फ़ज़ीलत वाले अय्याम हैं, इन में रोज़े रखना और ब कसरत ख़ैरात करना मुस्तह़ब है ताकि इन अवक़ात की बरकत से इस का अज्र दुगना (डबल) हो। (احیاء العلوم، 1/318 ملتقطاً)

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रिवायत करते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! जब तुम हर महीने तीन रोज़े रखो तो तेरहवीं, चौदहवीं और पन्दरहवीं के रखो। (ترمذی، 2/193، حدیث:761)

ह़ज़रते अबू उ़स्मान नहदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं सात रोज़ तक ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का मेहमान रहा। मैं ने पूछा : "ऐ अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ! आप किस त़रह़ रोज़े रखते हैं या आप के रोज़े कैसे होते हैं ?" फ़रमाया : "मैं हर महीने के आग़ाज़ में तीन रोज़े रखता हूं और अगर कोई आ़रिज़ा पेश आ जाता है तो महीने के आख़िर में तीन रोज़े रख लेता हूं।"

(مسند احمد، 3/268، حدیث:8641 مختصراً)

महीने भर का सवाब

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : "अय्यामे बीज़ में रोज़ा रखने से महीने भर का सवाब मिलता है ?" इर्शाद फ़रमाया : "हां ! पहली, दूसरी, तीसरी या तेरह, चौदह, पन्दरह या सत्ताईस, अठ्ठाईस, उन्तीस इन में से जिस में रोज़ा रखे सब का सवाब बराबर है।" (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 419)

एक रिवायत में है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें अय्यामे बीज़ के तीन रोज़े रखने का हुक्म दिया करते और फ़रमाया करते : येह एक महीने के रोज़ों के बराबर है। (نسائی، ص397، حدیث:2427)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हर महीने के अय्यामे बीज़ में रोज़े रखने की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई है और बुज़ुर्गाने दीन ने हर महीने रोज़ों के लिये अफ़्ज़ल अय्याम बयान फ़रमाए हैं इस लिये हमें चाहिये कि इन महीनों में भी रोज़े रखें ताकि ख़ूब रह़मतें और बरकतें ह़ासिल हों।

मोमिन का मौसिमे बहार

शुरूअ़ में बताया गया है कि जब महीनों के नाम रखे गए तो उस दौरान पांचवें और छटे क़मरी महीने में बहुत ज़ियादा सर्दी हुवा करती थी जिस की वज्ह से पांचवें का नाम जुमादल ऊला और छटे महीने का नाम जुमादल उख़्रा रखा गया। इसी मुनासबत से यहां सर्दियों में की जाने वाली नेकियों के ह़वाले से बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के चन्द अक़्वाल और उन के वाक़िआ़त नक़्ल किये जा रहे हैं।

रोज़ा रखिये और क़ियाम कीजिये

सर्दी हो या गर्मी ! हर मौसिम इ़बादत का मौसिम है लेकिन सर्दियों में कम वक़्त में ज़ियादा सवाब कमाना निस्बतन आसान है क्यूं कि सर्दियों के दिन छोटे होते हैं, रातें लम्बी और मौसिम ठन्डा रहता है। जैसा कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मौसिमे सरमा मोमिन के लिये बहार का मौसिम है कि इस में दिन छोटे होते हैं तो मोमिन उन में रोज़ा रखता है और उस की रातें लम्बी होती हैं तो वोह उन में क़ियाम करता (यानी नफ़्ल पढ़ता) है। (شعب الایمان، 3/416، حدیث:3940)

सर्दी बन्दए मोमिन के लिये बहार का मौसिम इस लिये है कि वोह इस मौसिम में फ़रमां बरदारियों के बाग़ात में चरता है और इ़बादतों के मैदानों में टहलता है नीज़ सर्दी में आसानी से अदा हो जाने वाले नेक आ'माल की क्यारियों में दिलो जान को ताज़ा करता है। जैसे मौसिमे बहार में चरागाह में जानवर चरते हैं और ख़ूब तन्दुरुस्त और फ़रबा हो जाते हैं यूंही मौसिमे सरमा में **अल्लाह** पाक ने अपनी इ़बादतों की जो आसानियां अ़त़ा फ़रमाई हैं उन की बरकत से बन्दए मोमिन का दीनो ईमान भी फ़रबा हो जाता

है क्यूं कि जब सर्दी का मौसिम आता है तो बन्दए मोमिन भूक और प्यास की मशक़्क़त उठाए बिग़ैर ही दिन में रोज़ा रख सकता है कि दिन छोटा और सर्द होता है लिहाज़ा रोज़े की तक्लीफ़ महसूस नहीं होती। (لطائف المعارف، ص372)

ठन्डी ग़नीमत

प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सर्दी के रोज़े ठन्डी ग़नीमत हैं।" (ترمذی، 2/210، حدیث:797)

इस की शर्ह में है : सर्दी के रोज़ों को ठन्डी ग़नीमत फ़रमाने की येह वज्ह है कि येह ऐसा माले ग़नीमत है जो किसी लड़ाई, थकावट या मशक़्क़त के बिग़ैर ही हाथ आ जाता है इसी लिये मुजाहिद इस ग़नीमत को आसानी से समेट लेता है। (لطائف المعارف، ص372)

इबादात में इज़ाफ़े का मौसिम

हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم मौसिमे सरमा की आमद पर ख़ुश होते और इसे इबादत में इज़ाफ़े का मौसिम क़रार देते, जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه मौसिमे सरमा की आमद पर फ़रमाते : सर्दी को ख़ुश आमदीद, इस में **अल्लाह** पाक की रह़मतें नाज़िल होती हैं कि शब बेदारी करने वाले के लिये इस की रातें लम्बी और रोज़ादार के लिये दिन छोटा होता है। (مسند الفردوس، 4/164، حدیث:6513)

इस फ़रमान की शर्ह में है : सर्दी की रातें लम्बी होती हैं लिहाज़ा येह मुम्किन होता है कि रात के एक ह़िस्से में आराम कर लिया जाए और फिर एक ह़िस्सा **अल्लाह** पाक की इबादत में गुज़ारा जाए। यूं बन्दए मोमिन नमाज़ पढ़ लेता है, क़ुरआने पाक का मख़्सूस ह़िस्सा तिलावत कर लेता है और जिस्म को उस की ज़रूरत के मुत़ाबिक़ नींद भी मिल जाती है इस त़रह़

सर्दियों की रातों में मुसल्मान अपना दीनी फ़ाएदा भी हासिल कर लेता है और उस के जिस्म को राह़त भी मिल जाती है। (لطائف المعارف، ص372)

सर्दियों में इबादत के मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल

अल्लाह पाक के नेक बन्दे सर्दियों के अय्याम में इ़बादत को मह़बूब जानते थे।

ह़ज़रते यह़या बिन मआ़ज़ राज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : रात लम्बी है, उसे नींद से छोटा न करो और दिन पाकीज़ा है उसे गुनाहों से आलूदा न करो। (صفة الصفوة، 4/87)

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सर्दी बन्दए मोमिन का कितना अच्छा ज़माना है! रात लम्बी होती है, बन्दा रात में नमाज़ के लिये क़ियाम करता है और दिन छोटा होता है तो बन्दा रोज़ा रख लेता है।

(لطائف المعارف، ص373)

जब सर्दी का मौसिम आता तो ह़ज़रते उ़बैद बिन उ़मैर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते : ऐ क़ुरआन वालो! तुम्हारे क़ुरआन पढ़ने के लिये रात लम्बी हो गई है लिहाज़ा क़ियाम में ख़ूब तिलावत करो और तुम्हारे रोज़े के लिये दिन छोटा हो गया है लिहाज़ा रोज़े रखो। (احادیث الشتاء، ص98)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! सर्दी की वज्ह से इ़बादात में सुस्ती मत कीजिये बल्कि सर्दी की मशक़्क़त पर सब्र कर के "اَفْضَلُ الْاَعْمَالِ اَحْمَزُهَا" या'नी अफ़्ज़ल तरीन अ़मल वोह है जिस में मशक़्क़त ज़ियादा हो।" (تفسیر کبیر، البقرة، تحت الآیة:34، 1/431) पर अ़मल कीजिये और उन बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم को याद कीजिये जो सख़्त सर्दियों में सारी रात **अल्लाह** करीम की इ़बादत में गुज़ार देते, नींद को दूर करने के लिये ठन्डे पानी से वुज़ू फ़रमाते। चुनान्चे

सर्दियों में बुज़ुर्गाने दीन की इबादात की हिकायात

﴾1﴿ ह़ज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सफ़्वान बिन सुलैम ज़ोहरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه सर्दियों में छत पर और गर्मियों में घर के अन्दर नमाज़ पढ़ते और सुब्ह़ तक सर्दी व गर्मी की वज्ह से बेदार रहते और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ गुज़ार होते : ऐ **अल्लाह** पाक! येह सफ़्वान की त़रफ़ से कोशिश है और तू ज़ियादा जानता है। (حلیۃ الاولیاء، 3/186، رقم:3645)

﴾2﴿ ह़ज़रते सफ़्वान और दीगर बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم सर्दी की रातों में एक कपड़े में नमाज़ पढ़ते थे ताकि सर्दी से नींद भागती रहे। कुछ बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم को इबादत में नींद आने लगती तो पानी में गो़ता लगा लेते और फ़रमाते : येह पानी (दोज़ख़ियों के) पीप के पानी से हलका है। (لطائف المعارف، ص375)

फ़िक्रे आख़िरत का एक अन्दाज़

﴾3﴿ ह़ज़रते ज़ुबैद यामी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه एक रात तहज्जुद के लिये उठे, वुज़ू के लोटे में हाथ डाला तो पानी बहुत ठन्डा था और सर्दी की शिद्दत से जमने के क़रीब था। ठन्डक महसूस हुई तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को जहन्नम की ज़म्हरीर[1] याद आ गई, सारी रात यूंही गुज़र गई और सुब्ह़ तक आप ने लोटे से हाथ न निकाला। सुब्ह़ आप की कनीज़ आई तो आप इसी कैफ़िय्यत में थे, कनीज़ बोली : जनाबे वाला! आप को क्या हो गया है? आप ने मा'मूल के मुत़ाबिक़ गुज़श्ता रात नमाज़े तहज्जुद भी नहीं पढ़ी और यहां वैसे ही बैठे हुए हैं। ह़ज़रते ज़ुबैद यामी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक तुम पर रह़्म फ़रमाए, हुवा येह कि मैं ने लोटे में हाथ डाला तो पानी की ठन्डक से

1... ज़म्हरीर शदीद क़िस्म की ठन्डक है जो कुफ़्फ़ार को अ़ज़ाब देने के लिये तय्यार की गई है। (النہایۃ فی غریب الاثر، 2/283) येह अपनी ठन्डक से यूं जलाती है जैसे आग अपनी गरमी से जलाती है। (تفسیر خازن، سورۃ ص، تحت الآیۃ:57، 4/47)

तक्लीफ़ हुई फिर मुझे ज़म्हरीर याद आ गई, ख़ुदा की क़सम ! तुम्हारे यहां आने तक भी मुझे इस पानी की ठन्डक मह़सूस न हुई। (صفۃ الصفوۃ،3/64)

﴾4﴿ ह़ज़रते दावूद बिन रुशैद رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक शख़्स किसी सर्द रात में नमाज़ की ख़ातिर वुज़ू करने उठा, पानी बहुत ठन्डा मह़सूस हुवा, वोह रोने लगा, इतने में एक पुकार सुनाई दी : क्या तुम इस पर राज़ी नहीं ? कि हम ने लोगों को सुला दिया और तुम्हें उठाया, तुम यूं रोना रो रहे हो ! (لطائف المعارف، ص374)

﴾5﴿ ह़ज़रते अबू सुलैमान दारानी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं एक सर्द रात मेह़राब में था। सर्दी ने बहुत परेशान कर दिया, मैं ने सर्दी के मारे एक हाथ छुपा लिया और दूसरा हाथ फैला रहा। इतने में मेरी आंख लग गई, कोई कहने वाला कह रहा था : ऐ अबू सुलैमान ! एक हाथ में हम ने रख दिया जो रखना था, अगर दूसरा हाथ भी होता तो उस में भी ज़रूर रखते। ह़ज़रते अबू सुलैमान दारानी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस के बा'द मैं ने ख़ुद से अ़ह्द कर लिया कि गर्मी हो या सर्दी हमेशा दोनों हाथ फैला कर ही दुआ़ करूंगा। (حلیۃ الاولیاء،9/272، رقم:13870)

जिन के लिये सर्दी गर्मी बराबर थी

बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِم के लिये सर्दी और गर्मी बराबर होती थी। जैसा कि मह़बूबे परवर्दगार صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के लिये दुआ़ की, कि **अल्लाह** पाक उन से गर्मी और सर्दी दूर फ़रमा दे। चुनान्चे ह़ज़रत मौलाए काएनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ सर्दी में मौसिमे गरमा के (बारीक) कपड़े ज़ेबे तन फ़रमाते और गर्मी में मौसिमे सरमा के (मोटे) कपड़ों को नवाज़ते। (حلیۃ الاولیاء،9/272، رقم:13870)

एक ताबेई बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को सर्दी में पानी से त़हारत ह़ासिल करने में बहुत तक्लीफ़ होती थी, उन्हों ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की चुनान्चे (उन की दुआ़ मक़्बूल हुई और) सर्दी के मौसिम में उन के पास पानी आता तो गर्म होने के सबब उस में भाप होती। (حلیۃ الاولیاء، 9/272، رقم:13870)

ह़ज़रते अबू सुलैमान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने सफ़रे ह़ज के दौरान एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को देखा कि सख़्त सर्दी में बोसीदा कपड़े पहने हुए हैं और पसीने में शराबोर हैं। ह़ज़रते अबू सुलैमान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को ह़ैरत हुई, आप ने बुज़ुर्ग से ह़ाल पूछा, उन्हों ने फ़रमाया : गर्मी और सर्दी तो **अल्लाह** पाक की दो मख़्लूक़ात हैं, **अल्लाह** पाक हुक्म फ़रमाए कि सर्दी गर्मी मुझ पर छा जाएं तो मुझे सर्दी व गर्मी लग के रहें और अगर वोह रब्बे करीम हुक्म फ़रमाए तो सर्दी व गर्मी मेरे क़रीब भी न आएं। उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने मज़ीद फ़रमाया : मैं तीस साल से इस जंगल में हूं, **अल्लाह** पाक मुझे सर्दी में अपनी मह़ब्बत की गर्माइश अ़त़ा फ़रमाता है और गर्मी में अपनी मह़ब्बत की ठन्डक बख़्शता है। (لطائف المعارف، ص376)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सर्दी के मौसिम में बहुत से लोग अपनी ग़ुर्बत की वज्ह से घर वालों और बाल बच्चों के लिये सर्दी से बचाव के गर्म लिबास वग़ैरा ख़रीदने की त़ाक़त नहीं रखते, ऐसे में अगर हम उन की मदद कर दें तो इस में हमारे लिये अज्रो सवाब है। "लत़ाइफ़ुल मआ़रिफ़" में है कि सर्दी के मौसिम में ग़रीबों पर सर्दी दूर करने वाली चीज़ें ईसार करना बहुत फ़ज़ीलत वाला अ़मल है। (لطائف المعارف، ص376)

एक क़मीस के बदले जन्नत में दाख़िला

ह़ज़रते सुलैमान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का बयान है कि अहले शाम में से एक शख़्स ने आ कर कहा : मुझे ह़ज़रते सफ़्वान बिन सुलैम ज़ोहरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

के बारे में बताओ, मैं ने उन्हें जन्नत में दाख़िल होते देखा है। पूछा गया : किस अ़मल के सबब ? उस ने बताया : किसी को एक क़मीस पहनाने के सबब। ह़ज़रते सफ़्वान बिन सुलैम ज़ोहरी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ से किसी ने उस क़मीस का तज़्किरा किया तो आप ने फ़रमाया : एक मरतबा मैं सख़्त सर्दी की रात में मस्जिद से निकला तो एक बरह्ना (बे लिबास) शख़्स पर नज़र पड़ी, मैं ने अपनी क़मीस उतार कर उसे पहना दी। (لطائف المعارف، ص376)

नेक वज़ीर

एक नेक वज़ीर को बताया गया कि एक औ़रत के चार यतीम बच्चे नंगे भूके हैं, वज़ीर ने एक आदमी को हुक्म दिया कि फ़ौरन जाओ और उन की ज़रूरत के कपड़े और खाना वग़ैरा उन्हें पहुंचाओ। फिर वज़ीर ने अपना (गर्म) लिबास उतार दिया और क़सम खाई कि बख़ुदा ! मैं तब तक लिबास न पहनूंगा और न ही कोई गर्माइश लूंगा, जब तक येह आदमी मुझे वापस आ कर बता न दे कि उन यतीमों को लिबास पहना दिये हैं और उन का पेट भर दिया है, चुनान्चे वोह आदमी चला गया और जब वापस आ कर बताया कि यतीमों ने कपड़े पहन लिये हैं और खाने से सैर हो गए हैं, तब नेक वज़ीर ने अपना (गर्म) लिबास दोबारा पहन लिया, नेक वज़ीर उस वक़्त सर्दी से कांप रहा था। (لطائف المعارف، ص378)

अल्लाह पाक हमें भी ग़रीबों, यतीमों की ज़रूरिय्यात का ख़याल रखने और उन के साथ हुस्ने सुलूक करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और माहे जुमादल ऊला और जुमादल उख़्रा में मौसिम जैसा भी हो ख़ूब ख़ूब इबादतें करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد